पद २६

(राग: पिलु - ताल: दीपचंदी)

आतां दाखवी साजणी गे मजला। कांत माणिकप्रभु सद्गुरुला।।ध्रु.।। चैन जिवा पडेना त्यावांचुनी। काय सार्थक त्याविण वांचुनी।।१।। मज माझें कळेना मी कोण। चित्त भ्रमलें चुकलें माझें स्थान।।२।। म्हणे मनोहर माझिये मना। सद्गुरुवांचुनी शांति येईना।।३।।